आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 5/दिसंबर 2023
Received: 11/12/2023; Published: 26/12/2023

कविता

अख़बार और इश्तिहार

- अनिल कुमार केसरी

अख़बारों ने ख़बरें छापी,
खबरों में इश्तिहार छप गये।
जब बैठा ख़बरें पढ़ने,
तो, पढ़ते-पढ़ते इश्तिहार पढ़ लिये।
फिर, सोच में डूबा मैं,
सोच रहा था यह-
कि, पहले भी अख़बार निकलते थे,
पहले भी ख़बरें छपती थी;
अब, पन्नें पलटते हैं,
सबसे पहले इश्तिहार निकलते हैं।
मैं पैसा देता हूँ ख़बरें पढ़ने को,
खबरें पढ़ने को अख़बार मैं लाता हूँ;
लेकिन, जब पढ़ता हूँ,
तो, हर पन्नें पर,
खबरों से ज्यादा इश्तिहार मैं पाता हूँ।
इश्तिहार और अख़बारों का यह ताना-बाना,
खबरों को लेकर चलता है,

या इश्तिहार में ख़बरें लेकर आता है।
साला, पढ़ता हूँ दुनिया की बर्बादी,
और अख़बारों में पढ़ते-पढ़ते,
सौन्दर्य-प्रसादन पर आ जाता हूँ।
ख़बरें, इश्तिहार में चलती है,
अख़बार, इश्तिहार पे पलता है,
देश और दुनिया को रहने दो,
सच, अब अख़बार को खलता है।
अख़बार निकलते रहते हैं,
ख़बरें, इश्तिहार बन आती हैं।
हालातों पर चर्चा करने वाले!
इश्तिहार में हटके-उलझे रह जाते हैं...।

****